नारी की वेदना

चैताली दीक्षित

क्यों छुते हो मुझे चलती हुई बसों में

नोचते हो तार तार मेरी लाज की चादर

क्यों करते रहते हो तंज मेरे शरीर पर

आंखों से ही कर लेते हो मेरा बलात्कार

क्यों देखते हो स्तनपान कराती मां के स्तनों को

क्या तुमने अपनी मां का नहीं किया स्तनपान

इतने पर भी मन नहीं भरता तुम्हारा

निर्वस्त्र कर भीड़ में घुमाते हो मुझको

हवस के दरिंदों से नुचवाते हो मुझको

तन, आत्मा सब घायल कर जाते हो मेरा

क्यों करते हो हैवानियत की इंतहा मेरे साथ

इसलिए ना कि मैं नारी हूं, मैं नारी हूं

देख सकोगे अपनी बहन, बेटी को मेरी जगह

काश बेटी की जगह तेरा ही गला घोट देती तेरी मां

पर नहीं कर सकती ऐसा कोई भी मां

यही है मां की वेदना, यही है नारी की वेदना

यही है नारी की वेदना

चल कहीं दूर निकल जाएं

ना ही आंसुओं का उबाल है

ना धड़क रहा सीन जोरों से

ना ही पसीने से भीगा बदन

ना बेचैनी का कोई आलम

फिर क्यों दिल कह रहा है

चल कहीं दूर निकल जाए।

ना किसी की है जबरदस्ती

ना किसी की दखलअंदाजी

ना अंधेरे को चीरती सान्नाहट

ना ऊंची दीवारों की सलाखें

फिर क्यों दिल कह रहा है

चल कहीं दूर निकल जाएं।

ना ही अपनों से बढ़ी दूरियां

ना सपनों ने छोड़ा है साथ

ना होठों ने मुस्कुराना भूला

ना ही उम्मीदों ने दामन छोड़ा

फिर क्यों दिल कह रहा है

चल कहीं दूर निकल जाएं।

शिलांग

ISSN:2583-8849